ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी व्यंग्य

राहुल विष्णू वाघमारे

पीएच.डी. शोधछात्र

साहित्य लेखन समाजसुधारने का सशक्त शस्त्र है। स्वतंत्रतापूर्व साहित्य हो या स्वतंत्र्योत्तर साहित्य, साहित्यकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से समाज को जगाने का काम किया है। जब देश को आजादी नहीं मिली थी तब साहित्यकारों ने समाज को गुलामी से अवगत कराकर उनपर होनेवाले जुल्म, अन्याय, अत्याचार के प्रति विद्रोह करने की प्रेरणा दी बहुत से क्रांतिकारीयों को अंग्रेजों के प्रति विद्रोह करने के लिए जेल जाना पड़ा और बहुत से क्रांतिकारी लेखकों को अपनी जान गवानी पड़ी। भारतीय तथा पाश्चात्य साहित्य में व्यंग्य का महत्वपूर्ण स्थान है। जिस प्रकार साहित्य में कहानी, नाटक, उपन्यास जैसी विधाएँ हैं, उनमें से एक विधा है 'व्यंग्य' भारतेंदु से लेकर हरिशंकर परसाई तक और आज भी व्यंग्य लिखा जा रहा है। जब देश को आजादी नहीं मिली थी तब भारतेंदु हरिश्चंद्र, बालकृष्ण भट्ट, राधाचरण गोस्वामी आदि लेखकोंने अपनी रचनाओं के द्वारा विदेशियों अन्याय, अत्याचार एवं उनके जुल्म का पर्दाफाश करने लोगों को विद्रोह करके के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया। देश को आजादी मिलनेपर व्यंग्य का महत्व और भी बढ़ गया। राजनेता उच्चवर्णिय लोग अपनी सत्ता एवं अधिकारों के दमपर गरीब जनता को कुचलने का काम करते थे।

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

राजनीतिक, शैक्षिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक जैसी समस्याओं ने समाज को जकड़ लिया था। जब कहानी, नाटक, उपन्यास जैसी विधाएँ इन समस्याओं को समाज के सामने लाने के लिए असह्य हो जाती है। तब साहित्यकार व्यंग्य का सहारा लेता है। व्यंग्यकार अपने व्यंग्य लेखन से समाज में फैली बेईमानी अन्याय, अत्याचार और दुर्गंध को साफ करता है। भारतेंदु युग का साहित्य अंग्रेजी शासन के विरुद्ध हिंदुस्तान की संगठित राष्ट्रभावना का प्रथम आव्हान था। यही से राष्ट्रीयता का जयनाद शुरू हुआ। भारतेंदु युगीन साहित्यकारों ने भारतेंदु, हरिश्चंद्र, बालकृष्ण भट्ट, राधाचरण गोस्वामी, प्रतापनारायण मिश्र आदि ने अपने निबंध, कविता, नाटक में व्यंग्य का प्रचूर मात्र से प्रयोग किया। व्यंग्य लेखन भारतेंदु हरिश्चंद्र 1850-85 का स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण है। उन्होंने नाटकों एवं निबंधों के माध्यम से अंग्रेजी शासन,

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

विदेशी अनुकरण जैसे विषयों पर प्रखर व्यंग्य लेखन किया है। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपने नाटक 'भारत दुर्दशा', 'अंधेरी नगरी' विषस्य विषमौधन, नाटकों में अंग्रेजी शासन पर करारा व्यंग्य किया है। उपर्युक्त उद्धारण में भी राजकुमार वर्मा ने भारतेंदु के व्यंग्य लेखन पर प्रकाश डालने का काम किया है। 'अंधेरी नगरी' नाटक में भारतेंदुने अंग्रेजी शासन पर व्यंग्य किया है। 'अंधेरी नगरी' अंग्रेजी राज्य का ही दूसरा नाम है। अंग्रेजी राज के हकीम घासीराम के चने खाकर लोगों पर दुगना टैक्स लगते हैं। इसी अंधेरी नगरी चौपट राजा अंधेरी नगरी की आलोचना ही नहीं वहा इस अंधेरी नगरी को खत्म करने के लिए भारतीय जनता की प्रबल इच्छा को प्रकट करता है। देखिए इस प्रबल इच्छा शक्ति के साथ उपस्थित खड़ा होनेवाला भारतेंदु का

निर्णय:

"जहां न धर्म न बुद्धि, नहिं नीति। न सृजन समाज ते ऐसा हि, आपुहि नसै, जैसे चौपट राज"[1]

इस प्रकार भारतेंदुने अपने नाटक भारत दुर्दशा हो या अंधेरी नगरी अगर शासन चलानेवाला गलत हो तो देश की दुर्गति निश्चित है। भारतेंदु युगीन साहित्यकारों में प्रतापनारायण का नाम भी उल्लेखनीय है। 'ब्राम्हण' नामक पत्रिका के माध्यम से उनकी रचनाएं जनता तक पहुंची थी। भारत की तत्कालीन दुर्दशा को देखकर उन्होंने वक्रोक्तिपूर्ण भाषा शैली में हृदय को कठोर ठेस पहुंचनेवाली व्यंग्य योजना अपनी रचनाओं में की है – प्रतापनारायण ग्रंथावली, प्रताप पीयुष, प्रताप समीक्षा, प्रताप लहरी आदी ने विविध विसंगतियोंपर मिश्र ने करारा व्यंग्य लिखा है। मिश्र ने 'टेढ़े जानी शंका सब काहू' निबंध में अंग्रेजो की रंगभेद नीति पर व्यंग्य लिखा है।

"काले रंगवालो को मारना कोई जुर्म है। कौआ सभी कोई उठा देता है। बाले सभी कोई कटा डालता है।"[2]

इतने सटीक शब्दों में अपने विचार समाज तक पहुंचाने का काम एक व्यंग्य कार्य ही कर सकता है मिस्टर जी ने बाल एवं कौवा का उदाहरण देकर अंग्रेजों की कूटनीति पर प्रहार करते हुए भारतीय जनता को सत्य से अवगत करने का काम किया है अंग्रेजों द्वारा भारत के धन को विदेश में दोगे जाने की प्रवृत्ति पर प्रहार किया है। भारत को सोने की चिड़िया कहां जाता था। भारत में सोने चांदी जैसी मूल्यवान चीज अंग्रेजों द्वारा विदेश से भेजी जाती थी।

प्रताप नारायण मिश्र ने अपने निबंध के द्वारा अंग्रेजों की इस कूटनीति का पर्दाफाश करने का काम अपने निबंधों के माध्यम से किया। अंग्रेज भारत देश को लूटकर देश की दुर्दशा कर रहे थे। उनका पर्दाफाश करने का काम किया है। तत्कालीन समय में देश के विभिन्न वर्गों के लोग पश्चिमी सभ्यता और सरकारी नौकरी पाने हेतु अंग्रेजी-शिक्षा प्राप्ति की ओर आकृष्ट थे। उनकी इस ललक को देखकर मिश्र जीने अंग्रेजी शिक्षा पर सीधा प्रहार न कर अंग्रेजी पढ़े लिखे किंतु बेकार बाबुओं पर व्यंग्य करते हुए लिखा है -

"तन-मन सो उद्योग ना करही। बाबू बनिवे के हित मरही। परदेसिन सेवत अनुरागे। सबफल खाय धतुरन लागे।"[3]

स्वाधीनता आंदोलन में पंडित बालकृष्ण भट्ट का साहित्य लेखन उल्लेखनीय है, तद्युगीन अन्य व्यंग्यकारो की तुलना में भट्टजी का व्यंग्य क्षेत्र व्यापक है एवं विस्तृत है। 'हिंदी प्रदीप' पत्रिका के संपादनकाल के दौरान इन्होंने व्यंग्य को समाज सुधार का अस्त्र बनाया है, ना की वैयक्तीक मानसिक विलासता का साधन, बालकृष्ण भट्ट एक सच्चे समाज

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

सुधारक थे। उन्होंने संसार के विरोधाभास का उपवास कर ढोंगी, स्वार्थ पारायण, भ्रष्टाचारी समाज सेवकों का व्यंग्य से खुलकर विरोध किया है।

सामाजिक दुर्दशा प्रस्तुत करने तथा अकाल ग्रसित भारत भूमि से यूरोप में अन्न ले जाने की अंग्रेजों की कूटनीति पर तीव्र प्रहार करते हुए भट्टजी के कथन को उद्धारित करते हुए वीरेंद्र मेहंदीवार ने लिखा है –

"हिंदुस्तान की करोड़ों दीन प्रजा भूखे मरे, और इंग्लैंड के पेट भरे, लोग इन भुक्कड़ों की रोटी छीन गुलछर्रे उडाये।"[4]

आजादी के पहले जो देश की हालत थी उसका प्रभाव बालकृष्ण भट्ट जी के लेखन पर दिखाई देता है। किस प्रकार अंग्रेज हमारे देश में आकर देश का ही खाकर देश की संपत्ति विदेश भेज कर हिंदुस्तान की जनता को भूखा मार रहे थे। देश की यह हालत देखकर जनता को जगाने का काम पर करकर समाज में जागृति लाने का व्यंग्य, लेखन के माध्यम से बालकृष्ण भट्टजी ने किया है।

संदर्भ सूची:

1. अंधेरी नगरी - भारतेंदु हरिश्चंद्र, पृ. क्र. 17
2. प्रताप नारायण ग्रंथावली - भाग 1, संपादक विजय शंकर मल्ल पृ. क्र. 19.
3. प्रतापलहरी - नारायण प्रसाद अरोड़ा, पृ. क्र. 1
4. आधुनिक हिंदी साहित्य में व्यंग्य - वीरेंद्र मेहंदीवार पृ. क्र. 100

Cite This Article:

वाघमारे व. र. (2024). *स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी व्यंग्य*, In Electronic International Interdisciplinary Research Journal: Vol. XIII (Number I, pp. 139–141) **EIIRJ**. https://doi.org/10.5281/zenodo.10648846